

# समेकित बाल विकास सेवाएं

समेकित बाल विकास सेवाएं देशभारत 2 अक्टूबर 1975 को लॉन्च किया गया;  
43 साल पहले

एकीकृत बाल विकास सेवा (ICDS) भारत में एक सरकारी कार्यक्रम है जो 6 वर्ष से कम उम्र के बच्चों और उनकी माताओं को भोजन, पूर्वस्कूली शिक्षा, प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल, टीकाकरण, स्वास्थ्य जांच और रेफरल सेवाएं प्रदान करता है।

[1] मोरारजी देसाई की सरकार द्वारा योजना को 1975

में बंद कर दिया गया और फिर दसवीं पंचवर्षीय योजना के तहत इसे फिर से शुरू किया गया। दसवीं पंचवर्षीय योजना भी ICDS

को मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित आंगनवाड़ी केंद्रों से जोड़ा गया और अग्रिम पंक्ति के कर्मचारियों के साथ जोड़ा गया। [2] कुपोषण और बीमार स्वास्थ्य से लड़ने के अलावा, कार्यक्रम का उद्देश्य लड़कियों को लड़कों के समान संसाधन प्रदान करके लैंगिक असमानता का मुकाबला करना है। 2005 के एक अध्ययन में पाया गया कि ICDS

कार्यक्रम विशेष रूप से कुपोषण को कम करने के लिए प्रभावी नहीं था,

मोटे तौर पर कार्यान्वयन की समस्याओं के कारण और क्योंकि सबसे गरीब राज्यों को सबसे कम कवरेज और धन प्राप्त हुआ था। [2] 2018-19 वित्तीय वर्ष के दौरान,

भारतीय केंद्र सरकार ने कार्यक्रम के लिए ₹ 16,335 करोड़ आवंटित किए। [3]

विशेष रूप से कमजोर समूहों के बच्चों के लिए कुपोषण से निपटने में ICDS

के व्यापक नेटवर्क की महत्वपूर्ण भूमिका है। [4] अंतर्वस्तु 1। पृष्ठभूमि 2 सेवाओं का दायरा 3 कार्यान्वयन 4 प्रभाव 5 यह भी देखें 6 संदर्भ 7 बाहरी लिंक

## पृष्ठभूमि

भारत में अधिकांश बच्चों को जन्म से शुरू होने वाले बचपन से वंचित रखा गया है। भारतीय बच्चों की शिशु मृत्यु दर 34 [5] है और कम-से-कम मृत्यु दर

39 [6] है और 25% नवजात बच्चे भारत में बच्चों के पोषण, टीकाकरण और शैक्षिक कमियों के बीच कम वजन के हैं। भारत के आंकड़े देश के औसत से काफी खराब हैं। [substantial]

ICDS को भारत में बच्चों के लिए राष्ट्रीय नीति के अनुसार 1975 [1] में लॉन्च किया गया था। वर्षों में यह दुनिया की सबसे बड़ी एकीकृत परिवार और सामुदायिक कल्याण योजनाओं में से एक बन गया है। [grown] पिछले कुछ दशकों में इसकी प्रभावशीलता को देखते हुए, भारत सरकार ने कार्यक्रम की सार्वभौमिक उपलब्धता सुनिश्चित करने की दिशा में प्रतिबद्ध किया है। [९]

सेवा क्षेत्र

अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करने के लिए ICDS के तहत निम्नलिखित सेवाएं प्रायोजित हैं: [१०]

प्रतिरक्षा

पूरक पोषण

स्वास्थ्य जांच

रेफरल सेवाएं

स्कूल पूर्व शिक्षा (गैर-औपचारिक)

पोषण और स्वास्थ्य की जानकारी

कार्यान्वयन

पोषण संबंधी उद्देश्यों के लिए ICDS 500 वर्ष (12-15 ग्राम प्रोटीन के साथ) प्रत्येक वर्ष से कम उम्र के प्रत्येक बच्चे को प्रदान करता है। [11] किशोर लड़कियों के लिए यह प्रतिदिन 25 ग्राम प्रोटीन के साथ 500 किलो कैलोरी तक है।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के तहत सार्वजनिक स्वास्थ्य

अवसंरचना के माध्यम से टीकाकरण, स्वास्थ्य जांच और रेफरल सेवा की सेवाएं प्रदान की गईं। [१] यूनिसेफ ने 1975 से ICDS योजना के लिए आवश्यक

आपूर्ति प्रदान की है। [10] विश्व बैंक ने कार्यक्रम के लिए वित्तीय और तकनीकी सहायता भी प्रदान की है। [९] ICDS कार्यक्रम की लागत औसतन \$ 10- \$ 22 प्रति बच्चा प्रति वर्ष है। [9] यह योजना केंद्र सरकार द्वारा प्रायोजित है, जिसमें प्रति बच्चा प्रति दिन 1.4 1.00 (1.4) US) योगदान दिया जाता है।

इसके अलावा, 2008 में, GOI ने ICDS और राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (NRHM) दोनों के लिए बाल विकास और विकास को मापने और निगरानी के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानकों को अपनाया। [1] ये मानक WHO द्वारा 1997 से छह विकासशील देशों के गहन अध्ययन के माध्यम से विकसित किए गए थे। [1] उन्हें न्यू डब्ल्यूएचओ चाइल्ड ग्रोथ स्टैंडर्ड के नाम से जाना जाता है और जन्म से लेकर 5 वर्ष तक के बच्चों की शारीरिक वृद्धि पोषण की स्थिति और मोटर विकास को मापते हैं। [12]

#### प्रभाव

2010 के अंत तक, यह कार्यक्रम 3.93 करोड़ बच्चों (6 वर्ष से कम आयु) के साथ 80.6 लाख गर्भवती और स्तनपान कराने वाली माताओं तक पहुंचने का दावा कर रहा है। [10] 1,241,749 परिचालन आंगनवाड़ी केंद्रों के साथ 6,719 परिचालन परियोजनाएं हैं। [1] कार्यक्रम के कई सकारात्मक लाभों को दस्तावेज और रिपोर्ट किया गया है

आंध्रप्रदेश और कर्नाटक में एक अध्ययन ने सभी बच्चों के मानसिक और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण सुधार का प्रदर्शन किया, भले ही वे अपने लिंग के बावजूद हों। [९] 1992 में नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक कोऑपरेशन एंड चाइल्ड डेवलपमेंट के एक अध्ययन में सुधार टीकाकरण और पोषण के साथ-साथ भारतीय बच्चों के जन्म-वजन और शिशु मृत्यु दर में सुधार की पुष्टि हुई [९] हालाँकि, विश्व बैंक ने इस कार्यक्रम की कुछ प्रमुख कमियों को भी उजागर किया है, जिसमें बालिकाओं के सुधार में असमर्थता, गरीब बच्चों से अधिक अमीर बच्चों की भागीदारी और भारत के सबसे गरीब और अल्पपोषित राज्यों के लिए वित्त पोषण का निम्नतम स्तर शामिल है। [१३]